मनुष्य की अपेक्षाएँ पूर्ण करने के लिए विषयवार विद्याशाखा की भूमिका

रामशकल साहनी
अनुसंधानकर्ता
स्कूल ऑफ एजुकेशन
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

प्रो. एच. बी. पटेल
डीन
स्कूल ऑफ एजुकेशन
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

सारांश

विद्याशाखा विभिन्न विषयों का समूह है। विषय उद्भव और विकास मानव विकास के साथ जुड़े हुए हैं। मनुष्य की अपेक्षाएँ अनन्त हैं और वह इन्हीं आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सम्पूर्ण जीवनकाल में दौड़ता एवं श्रम करता रहता है और इन्हीं अपेक्षाओं को पूर्ण करने के परिणामस्वरूप जब वह अपने मार्ग से विरक्त हो जाता है तो उसे पुनः अपने रास्ते वापस लाने हेतु मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जो कि विभिन्न विषयों के अध्ययन करने से सम्भव हो पाता है। भाषा हर प्रकार से अलग–अलग रूप में हमारे जीवन से जुड़ी हुयी है। मातृ भाषा, प्रादेशिक भाषा राष्ट्र भाषा और अर्न्तराष्ट्रीय भाषा इन सब में मातृ भाषा महत्वपूर्ण है। भाषाओं के पाठ्यक्रम में सर्वप्रथम मातृभाषा और प्रादेशिक भाषाओं को स्थान देना चाहिए और उसके बाद गणतंत्र की राष्ट्रभाषा हिन्दी को स्थान मिलना चाहिए क्योंकि इसके अभ्यास से राष्ट्रिय एकता बढ़ती है इतना ही नहीं यह राष्ट्र के हित में उपयोगी भी बनी रहती है। आयुर्वेद का अध्ययन संस्कृत भाषा में किया जाता है। धार्मिक और सामाजिक रीति–रिवाज एवं कर्मकाण्ड संस्कृत भाषा में किया जाता है। वर्तमान समय में मनुष्य की व्यवसायिक अपेक्षाएँ पूर्ण करने के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान अत्यावश्यक है। सामाजिक विज्ञान में लाखों वर्षों की प्रगति की शिक्षा मानव सभ्यता की प्रगति है इसलिए आज के मानव जीवन को समझने के लिए सदियों पुराने जीवन को देखना पड़ता है।मनुष्य की अपेक्षाएँ पूर्ण करने हेतु गणित एक महत्वपूर्ण विषय है जिसके सुव्यवस्थित अध्ययन और संचालन से वर्तमान युग का मानव काफी ऊँचाई तक पहुँच सकता है। विज्ञान सत्य की खोज को कहते हैं। सत्य वह है जिनका बोध ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से किया जाता है जो प्रयासों एवं अनुभवों द्वारा सिद्ध किया जा सके वही सत्य होता है।

१.प्रस्तावना

विद्याशाखा विभिन्न विषयों का समूह है इसमें कई ऐसी भी विद्याशाखा होती है जिसमें अलग–अलग विषयों की उपविद्याशाखा होती है। विषय उद्भव और विकास मानव विकास के साथ जुड़े हुए हैं। विद्याशाखा किसी भी विषय के ऊपर ज्ञान का उद्भव है जो कि विषय की ओर ले जाता है। उदाहरणार्थ– कोई इन्सान जब खाने पर ध्यान देता है तो खाना उसका विषय बन जाता है, जब चलता है तो चलना और राह या रास्ता उसका विषय बन जाता है, जब काम करता है तो वह काम ही उसका विषय बन जाता है, अर्थात इन्सान जो कुछ भी करता है उसी पर उसका ध्यान जाता है। इसी प्रकार जब मानव विकास हुआ तब इन्सान ने रोटी, कपड़ा और मकान पर ध्यान दिया और उसके द्वारा सृजन करता गया। मानव विकास की इसी प्रक्रिया का अध्ययन करने हेतु विभिन्न विषयों का भी उद्भव हुआ जिनका अध्ययन हम मानव सभ्यता एवं संस्कृति के रूप में करते आ रहे हैं।

मनुष्य की अपेक्षाएँ अनन्त हैं और वह इन्हीं आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सम्पूर्ण जीवनकाल में दौड़ता एवं श्रम करता रहता है और इन्हीं अपेक्षाओं को पूर्ण करने के परिणामस्वरूप जब वह अपने मार्ग से विरक्त हो जाता है तो उसे पुनः अपने रास्ते वापस लाने हेतु मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जो कि विभिन्न विषयों के अध्ययन करने से सम्भव हो पता है। अतः मनुष्य की अपेक्षाएँ पूर्ण करने में प्रत्येक विषय महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यहाँ हम कुछ विषयों की चर्चा करेंगे।

२.भाषा और साहित्य का विषय

इन्सान को अपनी बोली और भाषा जहाँ जन्म लेता है वहीं से प्राप्त होती है जो कि प्रत्येक के लिए प्राकृतिक सौगात है। यह भाषा जो अपनी होती है माँ की गोद से मिलती है और कुटुम्ब में जो भाषा बोली जाती है वह

परिवार और आस–पास के वातावरण से प्राप्त होती है। बचपन की जो भाषा है वह उसकी हमेशा की भाषा रह जाती है और जो भाषा माता और परिवार से मिलती है वह उसकी मातृ भाषा बन जाती है। जो कि जन्म से प्रत्येक के खून में मिल जाती है और साँसों की तरह अपनी हो जाती है। यही विचार प्रदर्शन का माध्यम बनता है। जो कि जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण है। मातृ भाषा द्वारा सब कुछ सुग्राही, सुपाल्य और सुदृढ़ बन जाती है। अपनी संस्कृति और सामाजिक रहन–सहन को अपनी मातृ भाषा से ही समझना पड़ता है।

भाषा हर प्रकार से अलग–अलग रूप में हमारे जीवन से जुड़ी हुयी है। मातृ भाषा, प्रादेशिक भाषा राष्ट्र भाषा और अर्न्तराष्ट्रीय भाषा इन सब में मातृ भाषा महत्वपूर्ण है। जिसका प्रभाव प्रकृति, पालन–पोषण और उसके विकास पर गहन छाप पड़ती है।

भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ पर अनेक भाषा बोली जाती है क्योंकि भारत संयुक्त भाषा समूह का देश है। भारतीय भाषाओं को चार महत्वपूर्ण भाषा परिवार में विभाजित किया जा सकता है।

1. यूरोपीय परिवार
2. द्रविण परिवार
3. ब्रह्म देशीय परिवार
4. आस्ट्रो परिवार

३.राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र में एक भाषा राष्ट्रभाषा माना जाता है। यह भाषा 14 सितम्बर 1949 को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है। भारत के बड़े भाग के राज्यों में हिन्दी भाषा ज्यादा बोली जाती है और उत्तर एवं मध्य भारत के राज्यों की प्रादेशिक भाषा भी हिन्दी है।

भारत में ई. 1857 से 1947 तक के समय में हिन्दी जन भाषा के रूप में विकसित हुयी एवं इसके व्याकरण शब्दकोष पर साहित्य सर्जन का विकास हुआ। अन्य प्रादेशिक भाषा में रचित साहित्य अनुवाद और पत्र पत्रिकाओं का अनुवाद हिन्दी भाषा में हुआ था। हिन्दी विषय अभ्यासक्रम में समाविष्ट करने के लिए भारत देश के विविध शिक्षापंथियों ने इस प्रकार के सूचन दिये हैं–मुदालियर माध्यमिक शिक्षा पंथ– भाषाओं के पाठ्यक्रम में सर्वप्रथम मातृभाषा और प्रादेशिक भाषाओं को स्थान देना चाहिए और उसके बाद गणतंत्र की राष्ट्रभाषा हिन्दी को स्थान मिलना चाहिए क्योंकि इसके अभ्यास से राष्ट्रिय एकता बढ़ती है इतना ही नहीं यह राष्ट्र के हित में उपयोगी भी बनी रहती है।

४.संस्कृत भाषा

संस्कृत भाषा की रचना ऋगवेद से लगभग 5000 वर्ष पहले हुयी थी। संसार में सर्वप्रथम सुसंस्कृत भाषा संस्कृत गिना जाता है। संस्कृत लिपि, स्वर–व्यंजन आदि में वर्गीकृत किया गया है और संस्कृत भाषा में ध्वनि विज्ञान आधुनिक और शुद्ध है। भारतीय साहित्य में विभिन्न उत्तम साहित्य संस्कृत में है। वेद, उपनिषद्, श्रुति, स्मृति, पुराण, नीतिशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, आध्यात्मिक दर्शनशास्त्र, मनुस्मृति, व्याकरण ग्रंथों का अनुवाद इत्यादि के लिए समृद्ध विषय और विश्वविद्यालयों में इस विषय का संशोधन विभाग स्थापित किया गया है।

आयुर्वेद का अध्ययन संस्कृत भाषा में किया जाता है। धार्मिक और सामाजिक रीति–रिवाज एवं कर्मकाण्ड संस्कृत भाषा में किया जाता है। संगीत, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, ज्योतिष, खगोलशास्त्र, इत्यादि विषयों के गहन अध्ययन के लिए संस्कृत भाषा की आवश्यकता पड़ती है। विद्यार्थी माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में संस्कृत भाषा और साहित्य विषय के रूप में चयन करके महाविद्यालयों में पढ़ सकते हैं।

५. अंग्रेजी भाषा और साहित्य

अंग्रेजी अर्न्तराष्ट्रीय भाषा है। यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली अर्न्तराष्ट्रीय आदान–प्रदान की भाषा है। दुनिया में 50 प्रतिशत से अधिक पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में छापी जाती हैं। अधिकांशतः लोग व्यापार कार्य इसी भाषा में करते है। सामूहिक माध्यम और सरकारी कार्यो में भी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है। शिक्षण क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा का अध्ययन अभ्यासक्रम में अनिवार्य कर दिया गया है। माध्यमिक कक्षा–10 में अंग्रेजी अनिवार्य विषय के रूप में किया गया परन्तु वर्तमान में अंग्रेजी एक विषय के रूप में किया गया है। वर्तमान समय में मनुष्य की व्यवसायिक अपेक्षाएँ पूर्ण करने के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान अत्यावश्यक है।

६.सामाजिक विज्ञान

विद्यार्थियों को ऐसे विषयों का शिक्षण मिलना चाहिए जो समाज राष्ट्र और विश्व के प्रश्नों से परिचित करा सके, उनके समक्ष मानव विकास की किताब खोल सके और सामाजिक उत्तरदायित्यों का साक्षात्कार करा सके।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण का एक मात्र उद्देश्य विद्यार्थियों को सामाजिक जीवन और उत्तरदायित्वों का चयन कराना है। इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र इत्यादि समाज के विविध पहलुओं का, मानव प्रवृत्तियों का, उनके प्रश्नों और समस्याओं का, उनकी सिद्धी और असफलताओं का और उनकी विकास गाथाओं का दर्शन करवाना है। ये सारे विषय स्कूल कक्षा से शुरू करके उच्च शिक्षा तक सिखाये जाते हैं। सामाजिक विज्ञान में इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान एवं नृवशंशास्त्र जैसे विषयों का समावेश किया गया है।

सामाजिक विज्ञान में लाखों वर्षों की प्रगति की शिक्षा मानव सभ्यता की प्रगति है इसलिए आज के मानव जीवन को समझने के लिए सदियों पुराने जीवन को देखना पड़ता है। मनुष्य ने हजारों वर्ष दौरान विविध क्षेत्र में सिद्धी हासिल की हुयी है। जिसका आज के समय में बोध लिया जा सकता है। इतिहास द्वारा भूतकालीन परिस्थिति, नागरिक शास्त्र द्वारा आर्थिक परिस्थिति और भूगोल द्वारा विविध देशों एवं प्रदेशों की समझ मिलती है।

मानवविद्याशाखा एक स्वतंत्र विद्याशाखा है। जिसमें मानव संस्कृतियों का अभ्यास किया जाता है। इस मानवविद्याशाखा के साथ प्राचीन और आधुनिक भाषाओं, साहित्य तत्वज्ञान, धर्म और कर्म विषय का अध्ययन आता है। सामाजिक विज्ञान अन्तर्गत मानवविद्याशाखा एक विषय है।

७.गणित शास्त्र

गणित में गण शब्द गर्भित है जिसका गणना के साथ संबंध है। यहाँ गणनाओं संबंधी पद्धतियों का सुआयोजित विषय गणित कहा जा सकता है। गणितशास्त्र विज्ञान की उपविद्याशाखा है। आदिकाल से ही मनुष्य कुछ नया करने की चेष्टा करता आ रहा है जिसमें गणित की अत्यन्त आवश्यकता हुयी है। अतः प्राचीनकाल से ही गणित का सर्वोच्च स्थान रहा है।

गणित का प्रारम्भिक उपयोग आदिकाल से ही होता चला आ रहा है जिसमें पशुओं को गिनना, फलों की संख्या आदि के लिए अँगुलियों तथा कंकड़ का प्रयोग होता रहा है। आगे चलकर इसी के विकसित रूप में ग्रहों की दिशा तथा समय, पर्वतों की संख्या, चन्द्रमा के परिलेख आदि का ज्ञान हुआ।

गणित शब्द का शाब्दिक अर्थ–''वह शास्त्र जिसमें गणना की प्रधानता हो। ''अतः गणित के संबंध में प्राप्त मान्यताओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि गणित, चिह्न, अंक, आधार, चित्र आदि संक्षिप्त संकेतों का विधान है। जिसकी सहायता से परिमाण, दिशा तथा स्थान आदि का बोध होता है।

गणित का जन्म गिनती से हुआ है और संख्या पद्धति एक प्रमुख शाखा है। प्राचीन भारत में गणित के अन्तर्गत संख्यायें, गणना, ज्योतिष एवं क्षेत्रमिति का अध्ययन होता था। प्राचीनकाल में कोई भी लेखन सामग्री न होने के कारण गणित के अध्ययन के लिए पाटी या खड़िया से लिखकर की जाती थी।

मनुष्य की अपेक्षाएँ पूर्ण करने हेतु गणित एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसके सुव्यवस्थित अध्ययन और संचालन से वर्तमान युग का मानव काफी ऊँचाई तक पहुँच सकता है।

८.विज्ञान और टेक्नालोजी

''विज्ञान का अर्थ विशिष्ट ज्ञान है। ''आइन्सटीन (Einstine) के अनुसार– ''हमारी ज्ञान अनुभूतियों की अस्त–व्यस्त विभिन्नताओं को तर्कपूर्ण एक रूप विधि बनाने के प्रयास को विज्ञान कहा जाता है।''

Science is an attempt to make the chaotic diversities of our sense experience correspond to logically uniform system of thought. विज्ञान सत्य की खोज को कहते हैं। सत्य वह है जिनका बोध

ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से किया जाता है जो प्रयासों एवं अनुभवों द्वारा सिद्ध किया जा सके वही सत्य होता है। विज्ञान नवीन खोजों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। विज्ञान के द्वारा नई खोजों के लिए प्रसंग मिलता है। विज्ञान जीवन की एक पद्धति है। यद्यपि प्राचीन भारत में आयुर्विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि में पर्याप्त प्रगति हुई, परन्तु विज्ञान एक स्तर से प्रगति के रूप में धीमी होती गयी।

किसी भी गुणवाचक विशेषण से जुड़कर यह ज्ञानशास्त्र विशेषण बनाता है, यह विशेषण भौतिक, रासायनिक, प्राकृतिक, सामाजिक आदि के साथ जुड़कर संगत ज्ञानशास्त्र भौतिक विज्ञान, रसायनिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि बन जाते हैं।

आधुनिक एवं परम्परागत समाज में सत्य तो यह है कि पूर्व में विज्ञान पर आधारित औद्योगिकी का अभाव मात्र है, जबकि आधुनिक समाज में विज्ञान पर आधारित प्रौद्योगिकी की अधिकता है। अपने वातावरण को समझने में मानव को अनवरत जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना पड़ा। उसने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अपनी जिज्ञासा समाप्त करने के लिए रात्य तत्वों का रांकलन किया। इरी क्रग गें गानव ने अपने बुद्धि–विवेक रो आगगन–निगगन के राथ ही साथ विश्लेषण–संश्लेषण उपागमों की सहायता से तर्कसंगत निष्कर्ष निकाले। मूल रूप से विज्ञान का उद्गम दर्शन से होता है।

९. वाणिज्य

प्रारम्भ में मानवी आवश्यकताएँ सीमित थीं। इसलिए गणित का ज्ञान सीमित था। आदिमानवों की प्रारम्भ में गणना, बेचने की जरूरतों में से अंकों और अंकों की मुख्य चार प्रक्रियाओं धन, ऋण, गुणा और भाग के ज्ञान की जरूरत हुयी होगी। जिसमें से अंक गणित का उद्भव हुआ होगा ऐसा कहा जा सकता है। उसके बाद जमीन मापने और अन्तर के जमीन मापन की जरूरत पड़ी होगी। उसकी वज़ह से भूमिति, समय और शक्ति के बचाव की प्रवृत्ति में बीजगणित की उत्पत्ति हुयी होगी। आज के युग में व्यापार उद्योग में आयी संकुलता के कारण व्यापार उद्योग के कारण गणित शास्त्रियों ने नई शाखा का उद्भव किया जिसे वाणिज्य गणित के नाम से जाना जाता है।

१०. अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र अंग्रेजी शब्द (Economics) का हिन्दी रूपान्तरण है और इसे सभी विज्ञानों की माता (Mother of all Science) कहा जाता है। इसमें सामाजिक तथ्यों तथा घटनाओं का तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। ये घटनाएँ धन प्राप्त करने तथा धन का प्रयोग करने वाली मानवीय क्रियाओं से सम्बन्धित होती हैं। अर्थशास्त्र की मूल उत्पत्ति (Orconomieus) से मानी जाती है जिसका अर्थ है– (Science of Household Management) वणिकवाद ने इस शास्त्र को आगे बढ़ाया।

साधनों के सीमित होने के कारण मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भिन्न–भिन्न कार्य करता है। इन विभिन्न कार्यों के सम्बन्ध में जो विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। उन्हें आर्थिक समस्याएँ कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दो प्रकार से कार्य करता है। एक वे जो धन कमाने से सम्बन्ध रखता है। दूसरा वे जो अर्जित धन को आवश्यकताओं की पूर्ति पर व्यय करने से सम्बन्ध रखता है। **एकड स्थिम**–"अर्थशास्त्र वह अध्ययन है जो शब्दों के धन के स्वरूप तथा कारणों की खोज करता है।"

११.निश्कर्ष

मनुष्य की अपेक्षाएँ अनन्त हैं और वह इन्हीं आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सम्पूर्ण जीवनकाल में दौड़ता एवं श्रम करता रहता है और इन्हीं अपेक्षाओं को पूर्ण करने के परिणामस्वरूप जब वह अपने मार्ग से विरक्त हो जाता है तो उसे पुनः अपने रास्ते वापस लाने हेतु मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जो कि विभिन्न विषयों के अध्ययन करने से सम्भव हो पता है। अतः मनुष्य की अपेक्षाएँ पूर्ण करने में प्रत्येक विषय महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यहाँ हम कुछ विषयों की चर्चा करने के पश्चात् यह समझ सकते हैं कि विभिन्न विषय मनुष्य के लिए किस प्रकार से महत्वपूर्ण हैं और मनुष्य की अपेक्षाएँ पूर्ण करने के लिए किस प्रकार से विशेष भूमिका अदा करती हैं।